p18 Aufgabe1 zum 07.01.2022

Bitte übersetzt in der rechten Spalte der gegebenen Reihe nach.

|  |  |
| --- | --- |
| οἷον γὰρ γέγονεν, |  |
| ἀκοῦσαι χρὴ τοὺς [333δ] ἐμὲ παρακαλοῦντας |  |
| πρὸς τὰ νῦν πράγματα. |  |
| ἦλθον Ἀθηναῖος ἀνὴρ ἐγώ, |  |
| ἑταῖρος Δίωνος, σύμμαχος αὐτῷ, |  |
| πρὸς τὸν τύραννον, |  |
| ὅπως ἀντὶ πολέμου φιλίαν ποιήσαιμι· |  |
| διαμαχόμενος δὲ τοῖς διαβάλλουσιν ἡττήθην. |  |
| πείθοντος δὲ Διονυσίου |  |
| τιμαῖς καὶ χρήμασιν |  |
| γενέσθαι μετ᾽ αὐτοῦ ἐμὲ |  |
| μάρτυρά τε καὶ φίλον |  |
| πρὸς τὴν εὐπρέπειαν |  |
| τῆς ἐκβολῆς τῆς Δίωνος |  |
| αὐτῷ γίγνεσθαι, |  |
| τούτων δὴ τὸ πᾶν διήμαρτεν. |  |
| ὕστερον δὲ δὴ κατιὼν οἴκαδε [333ε] |  |
| Δίων [ἀδελφὼ](https://www.zusokrates.de/fileadmin/Griechisch/Konjugation/K_D_Dual.pdf) δύο προσλαμβάνει Ἀθήνηθεν, |  |
| οὐκ ἐκ φιλοσοφίας γεγονότε φίλω, |  |
| ἀλλ᾽ ἐκ τῆς περιτρεχούσης ἑταιρίας ταύτης |  |
| τῆς τῶν πλείστων φίλων, |  |
| ἣν ἐκ τοῦ ξενίζειν τε |  |
| καὶ μυεῖν καὶ ἐποπτεύειν[[1]](#endnote-1) |  |
| πραγματεύονται, |  |
| καὶ δὴ καὶ τούτω |  |
| τὼ συγκαταγαγόντε αὐτὸν φίλω |  |
| ἐκ τούτων τε καὶ ἐκ |  |
| τῆς πρὸς τὴν κάθοδον ὑπηρεσίας |  |
| [ἐγενέσθην](https://www.zusokrates.de/fileadmin/Griechisch/Konjugation/K_D_Dual.pdf) ἑταίρω· |  |
| ἐλθόντες [334α] δὲ εἰς Σικελίαν, |  |
| ἐπειδὴ Δίωνα ᾔσθοντο διαβεβλημένον |  |
| εἰς τοὺς ἐλευθερωθέντας ὑπ᾽ αὐτοῦ Σικελιώτας |  |
| ὡς ἐπιβουλεύοντα γενέσθαι τύραννον, |  |
| οὐ μόνον τὸν ἑταῖρον |  |
| καὶ ξένον προύδοσαν, |  |
| ἀλλ᾽ οἷον τοῦ φόνου αὐτόχειρες ἐγένοντο, |  |
| ὅπλα ἔχοντες ἐν ταῖς χερσὶν |  |
| αὐτοὶ τοῖς φονεῦσι παρεστῶτες ἐπίκουροι. |  |
| καὶ τὸ μὲν αἰσχρὸν καὶ ἀνόσιον |  |
| οὔτε παρίεμαι ἔγωγε οὔτε τι λέγω |  |
| —πολλοῖς γὰρ καὶ ἄλλοις |  |
| ὑμνεῖν ταῦτα ἐπιμελὲς [334β] |  |
| καὶ εἰς τὸν ἔπειτα μελήσει χρόνον— |  |
| τὸ δὲ Ἀθηναίων πέρι λεγόμενον, |  |
| ὡς αἰσχύνην οὗτοι περιῆψαν τῇ πόλει, |  |
| ἐξαιροῦμαι· |  |
| φημὶ γὰρ κἀκεῖνον Ἀθηναῖον εἶναι |  |
| ὃς οὐ προύδωκεν τὸν αὐτὸν τοῦτον, |  |
| ἐξὸν χρήματα καὶ ἄλλας τιμὰς πολλὰς λαμβάνειν. |  |
| οὐ γὰρ διὰ βαναύσου φιλότητος |  |
| ἐγεγόνει φίλος, |  |
| διὰ δὲ ἐλευθέρας παιδείας κοινωνίαν, |  |
| ᾗ μόνῃ χρὴ πιστεύειν |  |
| τὸν νοῦν κεκτημένον |  |
| μᾶλλον ἢ συγγενείᾳ ψυχῶν καὶ σωμάτων· |  |
| ὥστε οὐκ ἀξίω [334ξ] ὀνείδους |  |
| γεγόνατον τῇ πόλει |  |
| τὼ Δίωνα ἀποκτείναντε, |  |
| ὡς ἐλλογίμω πώποτε ἄνδρε γενομένω. |  |

Ende p18

1. Die μύησις ist die erste Stufe der Einweihung in die Mysterien, die ἐποπτία die zweite Stufe. [↑](#endnote-ref-1)